IJAER/January-February 2024/Volume-13/Issue-1 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research

डिजिटल शिक्षा का शैक्षिक प्रदर्शन पर प्रभाव: एक तुलनात्मक विश्लेषण

Professor Tanuja Agarwal

Professor and HOD department of Teacher Education

K. R. Girls P. G. College Mathura
Dr. B. R. Ambedkar University Agra

सार

ऑनलाइन शिक्षा के माध्यम से समाज में शिक्षा के क्षेत्र में अभूतपूर्व परिवर्तन देखा गया है। इसके माध्यम से पारंपरिक शिक्षा के परिदृश्य को बदल कर रख दिया है। इसने शिक्षा व्यवसाय में भी व्यापक क्रांतिकारी परिवर्तन लाया है। इससे समाज के विभिन्न हितधारकों, जैसे शिक्षण संस्थान, छात्र, शिक्षकों आदि को बड़े पैमाने पर आर्थिक रूप से प्रभावित किया है। इस आलेख में संबंधित साहित्य की समीक्षा करते हुए अवलोकनात्मक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति का प्रयोग किया गया है। शोध से हमने जाना कि ऑनलाइन शिक्षा विद्यार्थियों तथा शिक्षा प्रदाताओं दोनों के लिए आर्थिक रूप से लाभकारी साबित हुआ है। ऑनलाइन शिक्षा ने छात्रों को विशेषज्ञता प्राप्त करने के नए अवसर प्रदान किए हैं। यह छात्रों को विभिन्न क्षेत्रों में शिक्षा प्राप्त करने का मौका देता है और उन्हें अपने शिक्षा का समय और स्थान चुनने की स्वतंत्रता प्रदान करता है। इसके अलावा, ऑनलाइन शिक्षा के माध्यम से शिक्षा प्रदाताओं के लिए भी नए व्यावसायिक अवसर उत्पन्न हो रहे हैं। परन्तु, इसका लाभ समाज के सभी वर्गों को संतुलित रूप से मिले, इसके लिए समाज तथा सरकार दोनों को जागरूक रहना होगा और कुछ आवश्यक कदम उठाने होंगे जिससे इसका फायदा समाज के प्रत्येक व्यक्ति को अधिक से अधिक मिल सके।

मुख्य शब्द :- ऑनलाइन शिक्षा, प्रभाव, आर्थिक विकास, कौशल विकास।

प्रस्तावना

भारत को डिजिटल रूप से सशक्त समाज और ज्ञान अर्थव्यवस्था में बदलने के डिजिटल इंडिया कार्यक्रम के दृष्टिकोण के साथ, भारत में शिक्षा क्षेत्र में आने वाले वर्षों में व्यापक वृद्धि देखने को मिलेगी। प्रौद्योगिकी आधारित शिक्षा की पहुंच और सरलता से भारतीय शिक्षार्थियों के जीवन में सामाजिकआर्थिक- परिवर्तन लाएगी। वर्तमान तकनीकी प्रगति के युग में ऑनलाइन शिक्षा को एक महत्वपूर्ण और प्राथमिक शिक्षा पद्धति के रूप प्रोत्साहित किया जा रहा हैं। ऑनलाइन शिक्षा के प्रति लोगों में जागरूकता एवं रुचि में परिवर्तन आ रहा है, इसके साथ ही इसके कई आर्थिक पहलू भी सामने आ रहे हैं। डिजिटल परिवर्तन के कारण डिजिटल उपकरण, ऑनलाइन अध्ययन सामग्री और ई लर्निंग - की शुरुआत हुई है । ऑनलाइन शिक्षा व्यवस्था से, जहाँ एक ओर, शिक्षार्थियों एवं शिक्षा प्रदाताओं दोनों को आर्थिक रूप से लाभ पहुँचा है, वहीं दूसरी ओर समाज के कुछ लोगों या वर्गों को आर्थिक नुकसान भी झेलने पड़े हैं। इस आलेख में, यह जानने कि कोशिश की गयी है कि ऑनलाइन शिक्षा व्यवस्था किस प्रकार और किस सीमा तक हमारे शिक्षा के आर्थिक आयाम को सकारात्मक या नकारात्मक रूप से प्रभावित कर रही है ? और इसके सकारात्मक आर्थिक प्रभावों से कैसे अधिक से अधिक लाभ प्राप्त किया जा सकता है?

ऑनलाइन शिक्षण ने डिजिटल कनेक्शन के माध्यम से शिक्षा और सीखने के क्षेत्र को व्यापक बना दिया है। अनावश्यक लागतों के उन्मूलन और सीखने और शिक्षा की प्रक्रिया में आसानी ने ई-लर्निंग की अवधारणा को लोकप्रिय बना दिया है। आज डिजिटलीकरण

परिवर्तन का युग है और यह उच्चतम संभव है सुलभ ऑनलाइन शिक्षा के साथ, हम निस्संदेह भारत में डिजिटल युग के लिए आगे बढ़ रहे हैं।

ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली:-

जैसा कि नाम से पता चलता है, ऑनलाइन शिक्षा इंटरनेट के माध्यम से प्रदान की जाती है। यह शिक्षा यह इंटरनेट के माध्यम से किया जाता है जिसमें शिक्षक लाइव माध्यम से शिक्षा प्रदान करते हैं। शिक्षक और छात्र के लिए समय या स्थान की कोई प्रतिबद्धता नहीं है। शिक्षक कुछ अभ्यासों, पाठ या चित्रों के माध्यम से पाठ पढ़ाता है। ऑनलाइन शिक्षा के लिए इंटरनेट बहुत महत्वपूर्ण है। ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली को सभी प्रकार के इलेक्ट्रॉनिक शिक्षण और शिक्षण के रूप में परिभाषित किया गया है। जो प्रकृति में व्यावहारिक हैं और शिक्षार्थी के व्यक्तिगत अनुभव, अभ्यास और ज्ञान के संदर्भ में ज्ञान के निर्माण को प्रभावित करने का इरादा रखते हैं।

अत्याधुनिक तकनीक के साथ, छात्रों और शिक्षकों द्वारा डिजिटल उपकरणों और टैबलेट और डिजिटल बोर्ड जैसे उपकरणों का उपयोग करके ऑनलाइन शिक्षण पाठ्यक्रम तैयार किए जाते हैं, इसमें वित्त की जरूरत पड़ती है, हालाँकि परम्परागत शिक्षा का ऑनलाइन शिक्षा में परिवर्तन के परिणामस्वरूप परिवहन, पाठ्यक्रम सामग्री और बुनियादी ढांचे की लागत में कमी आई हैं। इन अनावश्यक व्ययों से बचकर शिक्षण संस्थानों, स्कूलों को और विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रहे सामान्य निर्धन गरीब वर्ग के शिक्षार्थियों को आर्थिक रूप से फायदा हो रहा है | यह लेख ऑनलाइन शिक्षा के आर्थिक पहलू की खोज करता है तथा विविध हितधारकों पर इसके आर्थिक परिणामों पर प्रकाश डालता है।

ऑनलाइन शिक्षा के लाभ:

समकालीन डिजिटल प्रारूप शिक्षकों को किसी व्यक्ति के सीखने के स्तर और शिक्षा के आधार पर अध्ययन सामग्री को अनुकूलित करने की अनुमति देते हैं। शिक्षा प्रणाली के डिजिटलीकरण के साथ, शैक्षिक कार्यों का प्रभाव बढ़ रहा है। नए शिक्षण उपकरणों और प्रौद्योगिकी के संपर्क में आने पर छात्र प्रभावी स्व-निर्देशित शिक्षण कौशल विकसित करते हैं। पारंपरिक शिक्षा प्रणाली जुड़ाव के लिए सीमित स्थान प्रदान करती है जबकि डिजिटल शिक्षा प्रणाली सीखने के लिए विभिन्न प्रकार के विकल्प प्रदान करती है। संसाधनों की अपार उपलब्धता प्रत्येक सीज़न को बेहद ताज़ा और आकर्षक बनाती है। ऑनलाइन शिक्षा के प्रमुख संसाधन ई-पुस्तकें, प्रकाशन, वीडियो रिकॉर्ड किए गए व्याख्यान, क्विज़, चर्चा मंच, लाइव प्रश्न और उत्तर सत्र और साक्षात्कार आदि हैं।

ऑनलाइन शिक्षा के नुकसान:

आर्थिक रूप से पिछड़े लोगों के लिए यह शिक्षा अधिक कठिन हो जाती है। जो लोग अपने बच्चों को प्राइमरी स्कूल में पढ़ा रहे थे लेकिन ऑनलाइन पढ़ाई के कारण अब उनके सामने स्मार्टफोन खरीदने और उसे रिचार्ज कराने की समस्या का सामना करना पड़ा। इंटरनेट पर सभी उत्तर आसानी से मिल जाने के कारण छात्रों की अपनी रचनात्मकता भी निखरती है। यहां तक कि साधारण समस्याओं और प्रश्नों के लिए भी, वे इंटरनेट से मदद मांगने के आदी हो जाते हैं। सुरक्षा के दृष्टिकोण से, ऑनलाइन होने का मतलब यह नहीं है कि आपका बच्चा अध्ययन सामग्री की तलाश में है। ऐसी कई चीज़ें हैं जो एक बच्चे के साथ घटित हो सकती हैं जो उसके मानसिक और बौद्धिक स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हैं।

ऑनलाइन शिक्षण की आर्थिक व्यावहारिकता

शिक्षण संस्थानों पर आर्थिक प्रभाव

ऑनलाइन शिक्षा ने शिक्षण संस्थानों को वैश्विक रूप से विस्तार करने की संभावना प्रदान की है। इससे पहले से अप्राप्य बाजारों में प्रवेश करना आसन हो गया है। यह ऑनलाइन पाठ्यक्रमों, प्रमाणपत्रों और स्नातक पाठ्यक्रमों के नए आयामों की स्थापना को भी

संभव बनाया है। हालांकि, ऑनलाइन प्लेटफार्म पर ले जाने के लिए प्रारंभिक स्तर पर प्रौद्योगिकी, सामग्री विकास और संकाय प्रशिक्षण में भारी निवेश करने पड़ते हैं।

छात्रों के लिए लागतकारी और पहुँच

ऑनलाइन शिक्षा छात्रों के लिए परिवहन और आवास व्ययों को कम करके लाभ प्रदान करती है। इससे उन व्यक्तियों के लिए उच्च शिक्षा अधिगम करना आसन हो जाता है, जिन्हें पूर्व में वित्तीय रूप से अक्षम विद्यार्थियों को कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था। फिर भी, ऑनलाइन शिक्षा में छात्रों को कुछ अन्य समस्याओं का सामना करना पड़ता हैं जैसे कि इंटरनेट की उच्च गति, कंप्यूटर और ऑनलाइन शिक्षा प्राप्त करने में छात्रों के लिए बाधाएं उत्पन्न कर सकता हैं।

शिक्षक की भूमिकाओं का विकास

ऑनलाइन शिक्षा ने शिक्षक की भूमिका को पुनः निर्धारित किया है। पारंपरिक कक्षा शिक्षा और ऑनलाइन शिक्षा में समानताएँ होती हैं, परंतु ऑनलाइन शिक्षा में प्रौद्योगिकी, सामग्री प्रविष्टि और ऑनलाइन संवाद में अतिरिक्त कौशलों की आवश्यकता होती है। शिक्षक एक बड़े क्षेत्र तक पहुँच सकते हैं, लेकिन ऑनलाइन पाठ्यक्रमों को मौद्रीकरण करने के लिए अनौपचारिक दृष्टिकोण की आवश्यकता हो सकती है।

लागत प्रभावी शिक्षण सामग्री:

यदि हम लागत संबंधित तथ्यों की तुलना करते हैं, तो हम पाएंगे कि पारंपरिक शिक्षा की तुलना में ऑनलाइन शिक्षा छात्रों के लिए कहीं अधिक लाभदायक, सस्ती, मितव्ययी एवम् गुणवत्ता पूर्ण है। इस कारण ऑनलाइन पाठ्यक्रम सामग्री और मुद्रित पाठ्य पुस्तकों के निर्माण में विभिन्नता है। पेपरबैक पुस्तकें महंगी होती है क्योंकि इसे बनाने में बहुत सारी प्रक्रियाएँ शामिल होती हैं। जैसे-पेड़ों को काटने से लेकर कागज के उत्पादन, छपाई, पैकेजिंग और शिपिंग तक। इन सभी प्रक्रियाओं से प्रत्येक मुद्रित पुस्तक की लागत बढ़ जाती है। जबकि ई-पुस्तकें एक ऑनलाइन सॉफ्टवेयर पर बनाई जाती हैं और डिजिटल रूप से प्रकाशित और वितरित की जाती हैं। इसलिए, ई-पुस्तकों की लागत शैक्षणिक वर्ष के लिए पारंपरिक पाठ्य पुस्तकों की संयुक्त लागत से हमेशा सस्ती होती है। इसके अतिरिक्त, आपको सभी शिक्षण सामग्री एक ही स्थान पर मिल जाती है। पारंपरिक शिक्षा की माँगो के विपरीत, छात्रों को विभिन्न विषयों के लिए अलग-अलग किताबें खरीदने की ज़रूरत नहीं है। इस प्रकार, ऑनलाइन शिक्षा पर्यावरण और छात्र अनुकूल है।

स्थिर आधारभूत संरचना को डिजिटल आधारभूत संरचना से बदलना:-

स्कूल और महाविद्यालय जैसे पारंपरिक संस्थान भवन, खेल और खेल के मैदानों, प्रशासनिक कार्यालयों और बुनियादी ढांचे में कई अन्य निश्चित निवेशों की मांग करते हैं। जबकि ऑनलाइन शिक्षण में संस्था नियमित कक्षाओं और असाइनमेंट के लिए ऑनलाइन पोर्टल विकसित करती है। एआईपोर्टल सर्विस लर्निंग डिजिटल रूपांतरित- शिक्षकों को परीक्षण और असाइनमेंट के साथ अच्छी तरह से सिंक्रोनाइज़ेशन पाठ प्रदान करते हैं। यह छात्रों को एक इंटरैक्टिव तरीके से विविध विषय व्याख्यान प्रदान करते हैं।

कोई परिवहन लागत नहीं :-

परिवहन की लागत को बाहर करना ऑनलाइन सीखने की आर्थिक व्यवहार्यता के पीछे एक और महत्वपूर्ण कारण है। पार्किंग शुल्क, टोल और ईंधन लागत के साथ परिवहन लागत

छात्र के खर्च में काफी बढ़ जाती है। जबकि सीखने के ऑनलाइन मोड में छात्र और शिक्षक घर से ही पाठ्यक्रम की आवश्यकताओं को पूरा करते हैं।

कक्षा में कटौती करके उत्पादकता में सुधार हुआ।

शिक्षकों और छात्रों को कई दिनों या हफ्तों तक कक्षा में रखकर समय और संसाधन बर्बाद करने के बजाय, छात्र अपने सामान्य कार्य दिवस के दौरान नई अवधारणा को लागू कर सकते हैं। आख़िरकार, यहाँ लक्ष्य नए कौशल और ज्ञान का अनुप्रयोग है।

मापनीयता और वैश्विक पहुँच

ऑनलाइन शिक्षा के सबसे महत्वपूर्ण आर्थिक लाभों में से एक, इसकी मापनीयता है। एक बार बनाए गए डिजिटल पाठ्यक्रम न्यूनतम अतिरिक्त लागतों के साथ अनगिनत छात्रों तक पहुँच सकते हैं। यह स्केलेबिलिटी संस्थानों और शिक्षकों दोनों के लिए आय संभावनाओं को बढ़ावा देती है।

गुणवत्ता निगरानी की चुनौतियाँ

ऑनलाइन शिक्षा की गुणवत्ता सुनिश्चित करना एंगेजमेंट की देखरेख करने, उचित प्रतिक्रिया प्रदान करने और व्यक्तिगत प्रतिक्रिया प्रदान करने जैसी चुनौतियों का सामना करता है । संस्थानों को मजबूत मंचों और समर्थन प्रणालियों में निवेश करना होगा ताकि ऑनलाइन प्रमाणपत्रों की मान्यता की गारंटी दी जा सके।

सामाजिक और आर्थिक प्रभाव

ऑनलाइन शिक्षा संभावित बेरोजगारी दरों को कम करने और आर्थिक विकास को बढ़ावा देने की संभावनाओं के साथ कार्य बल को नई दिशा देने में सहायक हो सकती है। यह त्वरित तकनीकी परिवर्तन की युग में जीविका और अनुकूलन को बढ़ावा देने की आवश्यकता को पूरा करती है।

भारतीय अर्थव्यवस्था और समाज पर ऑनलाइन शिक्षा का प्रभाव

(अ) ऑनलाइन शिक्षा के शैक्षिक प्रभाव

1. ऑनलाइन शिक्षा छात्रों को किसी भी समय और किसी भी स्थान पर उत्कृष्ट गुणवत्ता वाली शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रमाणित करती है। चाहे वह कैरियर और तकनीकी शिक्षा हो या
2. परियोजना आधारित शिक्षा, यह शिक्षार्थियों को सीखने और मूल्यांकन के लिए एक अधिक संचार मंच प्रदान करता है।
3. निःशुल्क ऑनलाइन पाठ्यक्रम प्रारंभ - शिक्षक योगदान कर्ता और छात्र दोनों के लिए दृष्टिकोण इन पाठ्यक्रमों को समझने के लिए व्यक्तियों को अतिरिक्त आत्मविश्वास देता है और जब लोग परिणाम देखते हैं, तो वे उनके लिए अतिरिक्त भुगतान करने में संकोच नहीं करते हैं।
4. आभासी शिक्षा छात्रों को अपनी रूपरेखा तैयार करने का अवसर प्रदान करती है आगामी कार्रवाई और उनके जीवन को आगे बढ़ाने में सहायता करना ।
5. प्रत्यक्ष लाइव और इंटरैक्टिव डिजिटल लर्निंग; एजुटेक कंपनियाँ समावेशी ज्ञान प्रसारित कर रही हैं जो किशोरों और वयस्कों को एक लक्ष्य के साथ सीखने की समझ देता है और उनमें
6. विश्वास की दृष्टि पैदा करता है।
7. शैक्षिक क्षेत्र में नई प्रौद्योगिकियों का प्रभाव अधिकतर सराहनीय रहा है क्योंकि आधुनिक प्रौद्योगिकियों ने शिक्षार्थियों को डिजिटल और ऑडियो विजुअल सहायता के साथ रचनात्मक शिक्षण वातावरण के माध्यम से अपने ज्ञान कौशल को उन्नत करने का अवसर प्रदान किया है।

(ब) ऑनलाइन शिक्षा से आर्थिक लाभ पर प्रभाव

ई-लर्निंग के आर्थिक लाभों को दो श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता है:

1. शिक्षा का आर्थिक लाभ.
2. उच्च तकनीकी कार्यबल के आर्थिक लाभ।

ई-लर्निंग एक नई ज्ञान केंद्रित अर्थव्यवस्था के लिए श्रमिकों की अगली पीढ़ी को शिक्षित करने की बड़ी चुनौती का प्रमुख घटक है। एक बार जब डिग्री धारक ऐसे प्लेसमेंट के लिए तैयार हो जाते हैं, तो राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था पर उनकी शिक्षा का मुखर प्रभाव पड़ता

है। उनके लिए रोजगार के अवसर बढ़ जाते हैं। विकासशील देशों के लिए यह अक्सर चुनौती होती है कि उन्हें उन पदों को भरने के लिए कार्यबल को शिक्षित करने के साथ-साथ नौकरियां पैदा करने की आवश्यकता होती है। वर्तमान में ये कार्यालय कर्मचारी विशाल डेटा एनालिटिक्स और क्लाउड कंप्यूटिंग जैसे अन्य ज्ञान पर खुद को अपग्रेड करना चाहते हैं, क्योंकि वे बेहतर वेतन और पदोन्नति प्राप्त करना चाहते हैं, यही कारण है कि लोग नए पाठ्यक्रम अपनाते हैं। ऑनलाइन शिक्षा के आ जाने के कारण अब यह आसन हो गया है। बहुत सारे स्टार्टअप पहले से ही इस क्षेत्र में अपना पैर जमा रहे हैं क्योंकि उन्हें लगता है कि ई-कॉमर्स के बाद ऑनलाइन शिक्षा भारत में अगली बड़ी चीज होगी।

संक्षेप में ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था एक विकासशील अर्थव्यवस्था है। प्रौद्योगिकी निवेश से सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि होती है। अधिक प्रौद्योगिकी वित्तपोषण में बेहतर जीडीपी परिणाम देता है। शिक्षा में एक उत्कृष्ट फीडबैक से, इसके परिणाम आईसीटी शिक्षा में निवेश के सापेक्ष आर्थिक लाभ को बढ़ाकर प्रति छात्र शिक्षा की लागत को कम कर सकते हैं। आईसीटी अधिक कुशल, कम खर्चीले या अधिक सुलभ तरीके से निर्देश दे सकते हैं। उदाहरण के तौर पर ई-पाठक एक बार पाठक खरीद लेने के बाद बच्चों को अपेक्षाकृत सस्ते मूल्य पर हजारों पुस्तकों तक पहुंच प्रदान कर सकते हैं।

(स) ऑनलाइन शिक्षा का समाज पर प्रभाव

समाज के व्यक्तिगत सदस्यों पर शिक्षा प्राप्त करने का प्रभाव उल्लेखनीय हो सकता है। दूसरी ओर डिग्री धारकों पर उन्नत कौशल, भुगतान और रोजगार के परिणाम, शिक्षा के अन्य प्रभाव शामिल हैं। स्वास्थ्य और भलाई को बढ़ावा देना, विशेष रूप से लड़कियों और महिलाओं के बीच सामाजिक प्रभाव विचारणीय है। मुख्य रूप से विकासशील देशों के समाज पर शिक्षा का प्रभाव और ई-लर्निंग और समाज के बीच संबंध । सामाजिक पहलू जैसे कि ग्रामीण स्थान पर होना, एक महिला छात्र या एक अलग भाषा बोलना, ये सभी ई-लर्निंग कार्यक्रम तक पहुंच और उपयोग और उनकी सफलता को प्रभावित कर सकते हैं। हालाँकि बुनियादी ढाँचा एक विश्लेषणात्मक कारक है, लेकिन एकमात्र उपयोगकर्ता का सामाजिक संदर्भ, शिक्षा और तकनीकी ज्ञान भी महत्वपूर्ण हैं। अन्यथा तकनीकी चुनौती जिसने ई-लर्निंग को ग्रामीण क्षेत्रों में प्रदान करने से रोक दिया है, वह विश्वसनीय बिजली शक्ति की कमी है। इस बीच, ई-लर्निंग प्रौद्योगिकियों, चाहे छोटे हाथ से पकड़े जाने वाले उपकरण हों या प्रोजेक्टर, इस के लिए विद्युत शक्ति की आवश्यकता होती है। इन स्थानों पर एक कुशल, कम शक्ति वाली ई-लर्निंग प्रणाली डिजाइन करना महत्वपूर्ण है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. ऑनलाइन शिक्षा के प्रभाव के संबंध में अध्ययन
2. ऑनलाइन शिक्षा, व्यक्तिगत अनुभव, अभ्यास और ज्ञान के संबंध में अध्ययन

ऑनलाइन शिक्षा के लिए भारत सरकार की पहल

भारत के संसाधन विकास मंत्रालय ने स्वयं मंच (शिश्रा, एल., गुप्ता, टी., और श्री, ए., 2020) के माध्यम से विभिन्न पहल शुरू की हैं:

स्वयं प्रभा: 32 डीटीएच चैनल हैं स्कूली शिक्षा (9-12 स्तर) और उच्च शिक्षा के लिए साप्ताहिक आधार पर उच्च गुणवत्ता वाले शैक्षिक कार्यक्रम प्रसारित करना।

ARPIT: शिक्षण में वार्षिक समीक्षा कार्यक्रम (ARPIT) एक ऑनलाइन व्यावसायिक विकास कार्यक्रम है।

ई-पीजी पाठशाला: यह विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) और राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (एनसीईआरटी) द्वारा चलाया जाता है और 70 विषयों की सभी धाराओं में उच्च गुणवत्ता वाले पाठ्यक्रम-आधारित और इंटरैक्टिव ई-सामग्री प्रदान करता है।

ई-स्कॉलर: यह भारत में शिक्षा और अनुसंधान के क्षेत्र में शिक्षण और अनुसंधान में लगे प्रमुख शैक्षणिक संस्थानों और अन्य अनुसंधान और विकास संगठनों में काम करने वाले वैज्ञानिकों/विद्वानों और अन्य शिक्षकों की प्रोफाइल का एक प्रमुख डेटाबेस है। अन्य शिक्षकों का.

राष्ट्रीय डिजिटल लाइब्रेरी: छात्रों को प्रवेश और प्रतिस्पर्धी परीक्षाओं की तैयारी में मदद करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। यह लोगों को दुनिया भर के सर्वोत्तम ज्ञान और कौशल का उपयोग करके सीखने और तैयारी करने का अवसर प्रदान करता है। यह विशेष रूप से छात्रों को कई स्रोतों तक पहुंच प्रदान करता है।

सीईसी-यूजीसी यूट्यूब चैनल: यह शिक्षा पर अधिक सीमित शैक्षणिक पाठ्यक्रम-आधारित व्याख्यानों तक मुफ्त पहुंच प्रदान करता है।

भविष्य की संभावनाएँ

सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में होने वाले क्रांतिकारी परिर्वतन ने ऑनलाइन शिक्षण के क्षेत्र में मार्ग प्रशस्त किया है। शिक्षण में दृश्य-श्रव्य (Audio Visual) माध्यमों को पहले से ही उपयोग में लाया जाता रहा है, परन्तु सूचना प्रौद्योगिकी के उपयोग से इसे और प्रभावशाली बनाया जा सकता। भारत में 3.5 करोड़ शिक्षार्थी उच्च शिक्षा में पंजीकृत हैं, जिसके कारण सकल नामांकन अनुपात (जीईआर) 26 प्रतिशत है, जबकि विशाल जनशक्ति वाले चीन में यह 51.6 प्रतिशत है। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 के अनुसार 2035 तक 50 प्रतिशत जीईआर हासिल करने का लक्ष्य पूरा करने के लिए हमें ऑनलाइन शिक्षण को प्राथमिकता देनी होगी। इसके अलावा, एनईपी में प्रवेश और निकास के कई विकल्पों तथा क्रेडिट बैंक की व्यवस्था तभी संभव हो सकेगी जब उन्हें ऑनलाइन के वातावरण में शामिल होने की पर्याप्त सुविधा उपलब्ध करवाई जाएगी। (भारत सरकार-2019)

प्रत्येक रात्रि के पश्चयात सुबह होती है. कोरोना-19 की महामारी में प्रमुखता पाने से पहले तक ऑनलाइन शिक्षण हाशिये पर पडी थी । किन्तु इसके बाद भवनों एवं कक्षाओं में चलने वाली पारंपरिक शिक्षण व्यवस्था की विदाई की प्रक्रिया शुरू हो गई है। भविष्य में सब कुछ इस पर निर्भर होगा कि दुनिया ऑनलाइन शिक्षा के लिए कितनी साहसी और कल्पनाशील हो सकती है और ऑनलाइन शिक्षण को कितना आगे बढ़ाने के लिए उत्सुक है।

निष्कर्ष

ऑनलाइन शिक्षा की पहल के अंतर्गत ज़ूम ऐप, गूगलमीट जैसे विभिन्न ऐप की मदद से वैश्विक महामारी कोविड- 19 के दौरान जहां सम्पूर्ण विश्व की मानव जाति अपने घरों में कैद थी उस समयावधि में इन अप्प के माध्यमाँ से घर बैठे शिक्षा प्राप्त करने में मदद मिली। लॉकडाउन समय अवधि में शिक्षा पोर्टलों में गतिशील परिवर्तन देखने को मिला है। ऑनलाइन शिक्षा व्यावसायिक पैमाने का एक महत्वपूर्ण आर्थिक पहलू है। इससे यह महत्वपूर्ण हो जाता हैं कि विद्यार्थी अपने अध्ययन को किसी भी समय और कहीं से आसानी से शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं, जिससे उनके पास समय, श्रम और वित्त की बचत होती है। साथ ही, शिक्षा प्रदाताओं को भी आर्थिक लाभ होता है क्योंकि वे इसके द्वारा अधिक से अधिक छात्रों तक पहुंच सकते हैं, जिससे शिक्षा प्रदाताओं को अधिक वित्तीय लाभ होता है। इसके आर्थिक और सामाजिक प्रभावों को समझकर, हमें इसे सुनिश्चित करना होगा कि वर्तमान युवा पीढ़ी इसका अधिक से अधिक लाभ प्राप्त कर सके ताकि छात्रों और समाज का भविष्य समृद्ध हो सके ।

संदर्भ सूची

1. भार्गव, श्वेता,. और कौशिक, डॉ. विभा.," वर्चुअल लर्निंग का प्रभाव
2. भारतीय अर्थव्यवस्था और और समाज" (https://www.gyanvihar.org/journals/wp-
3. सामग्री/अपलोड/ 2020/07/ भारतीय-अर्थव्यवस्था पर वर्चुअल-लर्निंग का प्रभाव-एवं-समाज-श्वेता-भार्गव-डॉ.-विभा-कौशिक.
4. भारत सरकार। (2019), राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2019, मंत्रालय मानव संसाधन विकास।
5. डॉ. रविलास: लेख: ऑनलाइन शिक्षा के भविष्य की आवश्यकता और चुनौतियाँ, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ इनोवेटिव सोशल साइंस एंड ह्यूमैनिटीज़ रिसर्च आईएसएसएन-2349-1876 (प्रिंट), एस.प्रो. इतिहास एवं अनुसंधान पर्यवेक्षक, पृष्ठ 291
6. के.सी. श्रीवास्तव: प्राचीन भारत का इतिहास और संस्कृति, प्रकाशक - नाइटेड बुक डिपो 21 वाई. तनीशास्त्री रोड, इलाहाबाद, ग्यारहवां संस्करण, 2012-13, पृष्ठ 762
7. अभिषेक वडा: प्राथमिक शिक्षा में ऑनलाइन शिक्षा का परिचय, अंतःविषय अध्ययन के लिए स्कॉलरली रिसर्च जर्नल, आईएसएसएन-2278-8808। 1 मई, 2022 को प्रकाशित
8. अपूर्व महेंद्रू, एम.डी. (2022)। डिजिटल डिवाइड: भारत असमानता रिपोर्ट 2022 ऑक्सफैम इंडिया।
9. आशीष जोशी, बी.एम. (एन.डी.)। शहरी मलिन बस्तियों में लिंग और डिजिटल विभाजन नई दिल्ली, भारत का: क्रॉस-सेक्शनल अध्ययन। मेडिकल इंटरनेट जर्नल अनुसंधान।
10. चंदोला, बी. (2022, 20 मई)। भारत के डिजिटल विभाजन की खोज। अगस्त को पुनःप्राप्त 2023, ऑब्ज़र्वर रिसर्च फाउंडेशन से: https://www.orfonline.org/expert-speak/exploring-indias-digital-divide/
11. देवांगी शर्मा, आई. पी. भारत की शहरी मलिन बस्तियों में ऑनलाइन शिक्षा। अंतरराष्ट्रीय जर्नल ऑफ पॉलिसी साइंसेज एंड लॉ, 1(1).
12. गुयेन, ए. (2022, नवंबर)। डिजिटल समावेशन: डिजिटल में सामाजिक समावेशन आयु। सम्प्रीत कौर, ए.जे. (एन.डी.)। डिजिटल विभाजन को कैसे पाटें? शिक्षा।
13. सिल्वा ई. कोरुप्प, एम. एस. (2005)। डिजिटल विभाजन के कारण और रुझान। यूरोपीय समाजशास्त्रीय समीक्षा.
14. राष्ट्रीय शिक्षा नीति, भारत सरकार, यानी संसाधन विकास मंत्रालय। (2020)
15. किसाली, जी. (2000). ऑनलाइन शिक्षा: साइबरस्पेस में शिक्षण और सीखना। बेलरोन्ट, कैसलफोटनया: जिला